# निष्कर्ष

जब हम नारीवाद की बात करते हैं, तो अक्सर सभी पुरुष, इसका अर्थ पुरुष विरोधी विचारधारा मान लेते है पर ऐसा नहीं है । नारीवाद स्त्री और पुरुष के समान अधिकारों की मांग करता है| साथ ही शोषित हुई उन स्त्रियों के लिए स्त्री और पुरुषों की वो मिली-जुली आवाज है जो शोषित नारी के लिए एक साथ मिलकर संघर्ष करें क्योंकि स्त्री शोषण हर समाज में व्याप्त है| स्त्री शोषण के दो प्रमुख आयाम है एक समाज दूसरा परिवार दोनों की संरचना पुरुष प्रधान समाज के अनुरूप हुई है। जिसमें एक स्त्री पराधीन और उत्पीड़ित होती रही है| स्वतंत्रता जो प्रत्येक मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है परन्तु स्त्री जब स्वतंत्रता की मांग करती है तब एक स्त्री को अनेक तरह के नियमों में बांधा जाता है| 'सीमोन' की यह बात हर युग का यथार्थ है कि "स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है|" जिसे परिवार और समाज बनाता है| यह बात हर समाज पर लागू होती है। आज जब हम विकासशील होने का दंभ भरते है तो आज के ही सामाजिक ढांचे के अंदर एक स्त्री को कितने अधिकार मिले है जरा गौर से देखने से पता चलता है कि आज भी कितनी स्त्रियाँ स्वतंत्र है। मात्र कुछ औरतों को अधिकार मिलनें से सारी स्त्रियाँ स्वतंत्र नहीं होती। हमनें भौतिक विकास तो किया हैं पर मानवता का नहीं| स्त्री की स्वतंत्रा को उदन्ड़ता से जोड़ दिया जाता है|

आजादी से पहले भी स्त्री शोषित थी आजादी के बाद भी और आज भी शोषित ही है। बदला है तो सिर्फ शोषण का स्वरूप नारी के अस्तित्व का सवाल ज्यों का त्यों खड़ा है स्त्री के अस्तित्व की लड़ाई आज भी जारी है। इस लड़ाई को सफल बनाने के लिए प्रत्येक स्त्री को संघर्ष अपने ही घर से शुरू कर समाज तक जाना होगा| प्रत्येक स्त्री को सबसे पहले अपने घर से लगाई बंदिशों के विरुद्ध आवाज उठानी होगी इस लड़ाई की शुरुआत अपनों से करनी होगी|

एक स्त्री की लड़ाई उसके जन्म से शुरू होती है और मृत्यु पर्यन्त तक चलती रहती है। स्त्री को अपनी सुरक्षा, सहारे के लिए किसी पुरुष की नहीं उसको अपने घर (जो न पति का हो न पिता का एक स्त्री का अपना), शिक्षा, आत्म-निर्भरता और आत्मविश्वास की आवश्यक है|

स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति सजगता जरुरी है, वरना समाज की कठोर संरचना में वह दब के रह जाएगी| परिवार में एक स्त्री पर जो बंदिशें लगाई जाती हैं| कहीं ना कहीं समाज द्वारा ही संचालित होती है। परिवार समाज की वजह से मजबूर होता है क्योंकि परिवार को समाज का हिस्सा बने रहना जरुरी है| इसलिए प्रत्येक स्त्री को अपने घर से इन बंदिशों के खिलाफ संघर्ष की शुरुआत

करनी  ही होगी, जब एक-एक परिवार बदलेगा तो समाज अपने आप बदल जायेगा| किसी ने ठीक ही कहा है।

**सितम भी सहना दुआ भी देना, गया बेबसी का वो ज़माना।**

**अगर हो ज़ुर्रत गिरा दो बिजली, बना रही हूँ मैं आशियाना।।**